# केदारनाथ अग्रवाल

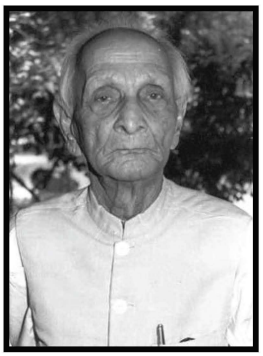

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के कमासिन गाँव में 1911 ई० में हुआ । उनकी शिक्षा इलाहाबाद और आगरा विश्वविद्यालय में हुई । वे पेशे से वकील थे और जीवनभर अपने शहर बाँदा में वकालत करते रहे । हिंदी के प्रगतिवादी आंदोलन से उनका गहरा जुड़ाव रहा । सन् 2000 में उनका निधन हो गया ।

'युग की गंगा', 'नींद के बादल', 'लोक और आलोक', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'आग का आईना', 'पंख और पतवार', 'हे मेरी तुम', 'मार प्यार की थापें', 'कहे केदार खरी खरी' आदि उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं । कविता के अलावा उन्होंने गद्य भी लिखा । उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी धारा के प्रमुख कवि माने जाते हैं । जनसामान्य का संघर्ष और प्रकृति सौंदर्य उनकी कविताओं का मुख्य प्रतिपाद्य है । उनकी कविताओं में मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के संग-साथ अपनी पहचान पाते हैं - ''हम पेड़ नहीं पृथ्वी के वंशज हैं / फूल लिए, फल लिए मानव के अग्रज हैं ।'' प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल की प्रकृति चेतना छायावादी प्रकृति चेतना और सौंदर्यबोध से अलग है । वे सौंदर्य को समस्त प्रकृति में व्याप्त मानते हैं । जीवन के सभी पक्षों में सौंदर्य का अनुभव कर लेते हैं । उन्हें खेत-खलिहान में, प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा में, नदी-वन-पर्वत में वह सौंदर्य दिखलाई पड़ता है । छायावादियों की भाँति वे कल्पना लोक में सौंदर्य का संधान नहीं करते, अपितु आस-पास के जीवन में इस सौंदर्य को देखते हैं । उनकी राजनीतिक कविताओं का संबंध जनसाधारण से है । वे शोषण का विरोध करने वाले ऐसे कवि हैं जिन्होंने पूँजीपतियों की हृदयहीनता एवं क्रूरता की खुलकर निंदा की है । वे शोषक वर्ग को जनता का मांस नोचने वाला गिद्ध कहते हैं । किसानों की दयनीय दशा के लिए वे पूँजीपतियों, मिल मालिकों, सूदखोरों, राजनीतिक नेताओं को उत्तरदायी ठहराते हैं । देश की दशा का चित्रण करते हुए वे करोड़ों बेरोजगारों की बात करते हैं, भूखे-नंगे लोगों का चित्रण करते हैं ।

केदारनाथ अग्रवाल ने गीत भी लिखे हैं और मुक्त छंद की कविताएँ भी की हैं । बिंबों और उपमाओं के संधान में भी पर्याप्त नवीनता दिखलाई पड़ती है । ग्रामीण जीवन से जुड़े बिंबों में गहरी आत्मीयता है और कविता की भाषा लोकभाषा के निकट होने के कारण पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ती है ।

प्रस्तुत कविता में कवि का जनवादी स्वप्न अभिव्यक्त हुआ है । कवि के मानस में आजाद हिंदुस्तान का ऐसा चित्र है जिसकी उर्वर भूमि में मान-सम्मान, स्वतंत्रता, ज्ञान और खुशियों के फूल खिलेंगे । यह कविता संबोधन शैली में लिखी गई है । इस कविता के माध्यम से कवि जनता में आशा की स्फूर्ति जगाना चाहता है ।

# पूरा हिंदुस्तान मिलेगा

इसी जन्म में,
इस जीवन में
हमको तुमको मान मिलेगा ।
गीतों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ।।

क्लेश जहाँ है,
फूल खिलेगा,
हमको तुमको त्रान मिलेगा ।
फूलों की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ।।

दीप बुझे हैं,
जिन आँखों के;
इन आँखों को ज्ञान मिलेगा ।
विद्या की खेती करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ।।

मैं कहता हूँ,
फिर कहता हूँ;
हमको तुमको प्रान मिलेगा ।
मोरों-सा नर्तन करने को,
पूरा हिंदुस्तान मिलेगा ।।

# अभ्यास

**कविता के साथ**

1. कवि के आशावादी दृष्टिकोण पर प्रकाश डालें ।
2. कवि के मन में आजाद हिंदुस्तान की कैसी कल्पना है ?
3. कवि आजाद हिंदुस्तान में गीतों और फूलों की खेती क्यों करना चाहता है ?
4. इस कविता में विद्या की खेती का क्या अभिप्राय है ?
5. इस कविता के केंद्रीय भाव पर प्रकाश डालें ।
6. कवि की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालें ।
7. 'मैं कहता हूँ / फिर कहता हूँ' में कवि के किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?
8. 'मोरों-सा नर्तन' के पीछे कवि का तात्पर्य क्या है ?
9. इस कविता के उद्देश्य पर प्रकाश डालें ।
10. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें -

    (क) क्लेश जहाँ है,
    फूल खिलेगा;
    हमको तुमको त्रान मिलेगा ।

    (ख) निम्नांकित पंक्तियों की व्याख्या करें -
    दीप बुझे हैं,
    जिन आँखों के;
    इन आँखों को ज्ञान मिलेगा ।

**कविता के आस-पास**

1. अपने शिक्षक की मदद से कुछ इसी तरह की कविताओं का संग्रह करें जो आप में नई आशा, उत्साह एवं स्वाभिमान का संचार कर दें ।
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए । इस पर एक निबंध तैयार करें ।
3. कविता का सस्वर वाचन करें ।
4. 'श्रम का सूरज' रामविलास शर्मा के द्वारा संपादित केदारनाथ अग्रवाल की कविता पुस्तक है । उसे पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें और राष्ट्रीय चिंता से जुड़ी हुई कविताएँ छाँटकर अपनी कॉपी में लिखें ।

**भाषा की बात**

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखें -
    जीवन, मान, फूल, ज्ञान

2. 'विद्या' का बहुवचन रूप लिखें ।

3. मान और ज्ञान से पाँच-पाँच वाक्य बनाएँ ।

**शब्द निधि**

पथ : रास्ता

क्लेश : कलह

त्रान : रक्षा, मुक्ति